Dr. Madan Paswan
History Dept., D.B. College.

August 2020
Lecture No. 19
Date: 17.08.2020

Class:- B.A. Part-I (Hons.) Paper-1st
Topic: Unit-I (i) भारत में प्रागैतिहासिक संस्कृतियाँ.

पुरा-पाषाण काल (Palaeolithic Age):—

मानव सभ्यता का बीजारोपण सर्वप्रथम पाषाण काल की कठोर स्थली में हुआ। पाषाणकालीन मनुष्य के क्रमिक विकास को परिलक्षित करने के लिए 1863 ई० में लुब्बक (Lubbock) जैसे इतिहासकार ने पाषाण काल को दो भागों — (1) पूर्वपाषाण काल (Palaeolithic Age)
(2) उत्तरपाषाण काल (Neolithic Age) में विभाजित किया।
इतिहासकारों ने इन दोनों के बीच मध्य पाषाण काल (Mesolithic Age) का पता लगाया।

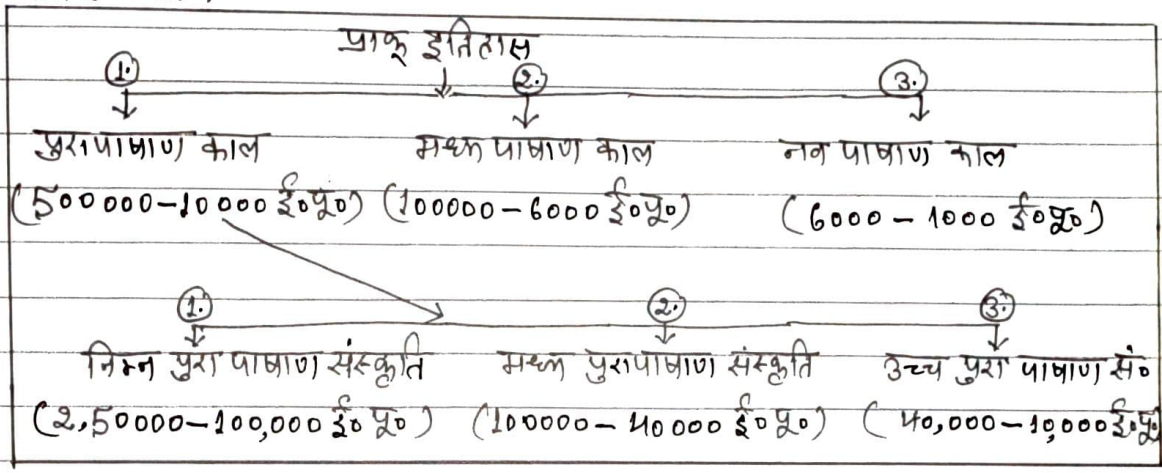

पाषाण काल की प्रारंभिक अवस्था को पुरापाषाण काल कहते हैं। मानव जीवन का सबसे अधिक समय इसी अवस्था में व्यतीत हुआ। भारत के विभिन्न भागों में यह अवस्था लगभग 2.5 लाख वर्ष से कुछ पहले आरम्भ हुई तथा लगभग 10000 वर्ष पहले तक बनी रही। भारत में पाषाणकालीन सभ्यता का अनुसंधान 1863 ई० से प्रारम्भ हुआ। इसी वर्ष भारतीय जिऑलॉजिकल सर्वे के विद्वान रार्बट ब्रुस फूट ने मद्रास के समीप पल्लावरम नामक स्थान पर पूर्वपाषाणकाल का एक पाषाण निर्मित औजार प्राप्त किया। तत्पश्चात् विलियम किंग, ब्राउन, काक बर्न, सी० एल० कार्लाइल, वैकेट ब्लैनफर्ड आदि विद्वानों ने अपनी खोजों के परिणामस्वरूप विभिन्न क्षेत्रों से कई पूर्व पाषाण काल के उपकरण प्राप्त किये।

सर्वाधिक महत्वपूर्ण अनुसंधान 1935 ई० में डी० टेरा तथा पीटरसन द्वारा किया गया। इन दोनों विद्वानों के निर्देशन में येल कैम्ब्रिज अभियान दल ने शिवालिक पहाड़ियों की तलहटी में बसे हुए पोतवार के पठारी भाग का व्यापक सर्वेक्षण किया था। इन्हीं अनुसंधानों से भारत की पूर्व-पाषाणकालीन सभ्यता के विषय में हमारी जानकारी बढ़ी। पूर्व पाषाण काल को भिन्नता के आधार पर तीन कालों में विभाजित किया जाता है:— (1) प्रारम्भिक अथवा निम्न पुरापाषाण काल (2) मध्य-पूर्व पाषाण काल तथा (3) उत्तर-पूर्वपाषाण काल।

Continue ....